टिप्पणी

# 31

# पर्यटन के बुनियादी ढांचे का विकास और पर्यटन की वृद्धि

भारत ने, विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशेष स्थान बना लिया है। क्योंकि देश में सर्वत्र फैले पर्यटक स्थलों की विविधता के प्रति पर्यटकों को आकर्षित करने की उनमें अपार सामर्थ्य है। फिर भी हम अपने पड़ोसी देशों जैसे चीन, सिंगापुर, मलेशिया और थाईलैण्ड से अब भी पीछे हैं।

इस पाठ में हम परिवहन तंत्र जैसी सुविधाओं के विकास और होटलों में आवास स्थान और पर्यटन के बीच सम्बन्ध की चर्चा करेंगे।

पर्यटन के संचालन में हम प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं जैसे पर्यटक गाइड और टुअर के स्थान के सम्बन्ध में विभिन्न स्तर पर, कर्तव्यों का भी अध्ययन करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- परिवहन जाल की व्यवस्था करने की अधिकाधिक आवश्यकता पर पर्यटन के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- पर्यटकों के लिए आवश्यक सुख–सुविधाओं का आयोजन करने के लिए होटलों, रेस्तरां और आथित्य सत्कार सेवाओं के आधारिक ढांचे की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- स्थानीय व लम्बी दूरी के परिवहन के रूप और पर्यटन के बीच सम्बन्ध स्थापित कर उसके महत्व को स्पष्ट कर पाएंगे;

टिप्पणी

- पर्यटक गतिविधि को बढ़ाने के लिए टुअर गाइडों और टुअर परिचालकों की उपयोगिता का मूल्यांकन कर सकेंगे;
- ट्रैवल एजेन्सी के कार्यकर्ताओं के रूप में टुअर गाइडों और टुअर परिचालकों की व्यक्तिगत स्तर और समूह स्तर पर भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे;
- टुअर परिचालन की मौसम विशिष्टता और गंतव्य विशिष्टता के बीच अन्तर कर सकेंगे।

## 31.1 परिवहन और पर्यटन

परिवहन, पर्यटक उद्गम और गंतव्य के स्थानों के बीच पुल का काम करता है। यह, अपने पर्यटक स्थानों तक पहुंच प्रदान करके, क्षेत्र को बाहर के लिए खोल देता है। इसके बिना पर्यटन के संसाधन चाहे जितने भी आकर्षक और सुख–सुविधाओं से युक्त हों, किसी लाभ के नहीं हो सकते हैं। हम किसी एक क्षेत्र में परिवहन प्रणाली को संगठित किये बिना, पर्यटन के नियोजन की बात नहीं कर सकते हैं। इस प्रणाली के अंतर्गत, मार्गों का जाल या परिवहन के साधनों और परिवहन का तन्त्र आता है। पहले वर्ग में हवाई तथा समुद्री मार्ग आते हैं। अंतर्देशी मार्गों में सड़कें और रेल मार्ग आता है। परिवहन के रूप वायुयान, जहाज, स्टीमर, कारें, टैक्सी, आरामदायक गाड़ियां, बसें, और रेलगाड़ियां आती हैं। टैक्सी, कारें, ऑटोरिक्शा, तांगा, मोपेड, साइकिल और ट्रामें विशेष रूप से स्थानीय परिवहन के रूप में महत्वपूर्ण हैं। यह शहर में यात्रीयों को हवाई अड्डों, बसस्टैंडों, या रेलवे स्टेशनों से होटलों और पर्यटक स्थलों तक लाने के लिये होते हैं। अधिक ऊंचाइयों पर पर्यटक क्षेत्रों में, शायद आप को रस्सी मार्ग और बिजली चालित ट्रॉलियां, टहू या तांगा सवारी और पाल नावें मिल जाएंगी।

यदि देश में, उसके बड़े और छोटे तंत्रों दोनों में वैकल्पिक परिवहन सुविधाओं के सभी संभावित प्रकार मौजूद हैं तो, पर्यटन सर्वाधिक आकर्षक हो जाता है। राष्ट्रीय महामार्ग और राज्य महामार्ग राष्ट्रीय नेटवर्क बनाते हैं। ये भारत के मुख्य परिवहन गतिविधि केन्द्रों के बीच कड़ी प्रदान करते हैं। पर्यटक क्षेत्र के अन्दर मुख्य मार्गों और नोडल नगरों के बीच परिवहन व्यवस्था का परिसंचरना क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण करता है। यह क्षेत्रीय स्तर पर छोटा तन्त्र है। सर्वाधिक छोटे तन्त्र के अंदर पर्यटकों की परिवहन सम्बन्धी जरूरतों की देखभाल करने के लिये निजी यात्रा संगठनों की निचले स्तर पर बड़ी भूमिका होती है। पर्यटक को केवल पर्यटक क्षेत्र तक पहुंच ही आवश्यकता नहीं अपितु उसकी पहुँच कम खर्चे पर, कम समय में और आरामदेय होनी चाहिए। उदाहरण के लिये, जब कभी पर्वतीय क्षेत्रों या खराब मौसम के कारण परिवहन व्यवस्था ठप्प हो जाती है, तो पर्यटकों के लिये परिवहन की वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए।

यदि परिवहन के विभिन्न साधनों को विभिन्न मार्गों तथा छोटे बड़े पर्यटक स्थलों के बीच अच्छा तालमेल है तो ये पर्यटन की अनुकूल दशाओं में शामिल है। आजकल, परिवहन प्रणाली की क्षमता ही पर्यटक आवागमन का आकार और आने–जाने वाले पर्यटकों की

टिप्पणी

संख्या निर्धारित करती है। परिवहन प्रणाली की क्षमता में वृद्धि के अलावा, आरामदेय सीटें, अपेक्षित तीव्र गति और रेल, रोड और हवाई किरायों में रियायतें प्रोत्साहन बनते जा रहे हैं। ये पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करते हैं और बदले में अधिक आय प्राप्त होती हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि पर्यटक, अपने कुल व्यय का लगभग 40% मात्र भ्रमण पर खर्च करके अपनी आय हमें हस्तांतरित करते हैं।

## क. वायु परिवहन

वायुयान पर्यटकों को लम्बी दूरियों तक ले जाते हैं। आज भारत में लगभग 97% अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक हवाईमार्ग द्वारा आते हैं। देश के अन्दर, उनमें से 82% वायुयान द्वारा यात्रा करते हैं, जबकि समुद्री मार्ग से 11% और स्थल मार्गों से 7% यात्रा करते हैं। लदंन और न्युयार्क के बीच, सन् 1920 में समुद्री सफर में 120 घण्टे लगते थे। आज आधुनिक जेट वायुयान सिर्फ 6 घण्टे लेते हैं। यह वायुयान सामान्यतः प्रतिघंटा लगभग 1000 कि.मी. की रफ्तार से उड़ते हैं। वे आवाज की अधिकतम रफ्तार प्रति घंटा 1194 कि.मी. पर उड़ान भरने में सक्षम हैं। यह भू–मंडलीय पर्यटन के लिये प्राथमिक महत्व के हो जाएंगे क्योंकि उनकी यात्री उठाने की क्षमता अत्यधिक विशाल है और बिना रुके उड़ानों के दौरान तेज रफ्तार होती है।

रियायतों या आसानी से संचालन योग्य पास के रूप में किराये में कटौती भिन्न आयु समूहों को दी जाती है। पर्यटन के दृष्टिकोण से मंद अवधि और चोटी की अवधि में भिन्न तरह से किराया लिया जाता है। यह सक्रिय पर्यटन को बढ़ाने में काफी मदद करता है।

धनी देशों से उच्च वर्ग के यात्री, जो ज्यादातर व्यापारिक पर्यटकों के रूप में आते हैं, भारत के अन्दर आनेजाने के दौरान भी महंगे वायुयान के सफर के लिये भुगतान करना पसंद करते हैं। कारण यह है कि वे अपने पास उपलब्ध सीमित समय के अन्दर ही अपने व्यापार सौदे खत्म करना चाहते हैं और अधिक पर्यटक स्थलों को देखने जाना चाहते हैं। वे एयर ट्रेवल कम्पनियों द्वारा दी जा रही रियायतों की फिक्र नहीं करते हैं, क्योंकि उनकी मुख्य चिन्ता किसी भी कीमत पर समय बचाने की होती है। फिर भी, निम्न बजट में आराम पसन्द पर्यटक आकर्षित करने के लिये, हमारे प्राइवेट और सार्वजनिक हवाई सेवाएं रियायती टिकट पेश करती हैं क्योंकि वे हवाई यात्रियों के सबसे बड़े अनुपात हैं।

हमारे हवाई मार्ग जाल को बेहतर संचालित करने की शुरूआत हो गई है। यह हमारे 12 अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों को आदर्श अड्डों में तब्दील कर देगी और महत्वपूर्ण पर्यटक स्थानों में दूसरे अड्डों के स्तर में सुधार करेगी। ऐसा करते हुए, यह अंततः उत्तर में अमृतसर–श्रीनगर, दक्षिण में हैदराबाद–बंगलुरू–कोची, पश्चिम में अहमदाबाद–गोआ और उत्तर पूर्व में गौहाटी को समाविष्ट कर लेगी। हमारे महानगरों मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई में मुख्य अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहले ही सुधार सुविधाओं के विस्तार के लिये कोर में शामिल कर लिये गये हैं। वाराणसी, भुवनेश्वर और जयपुर, शहरों में पर्यटक सर्वाधिक आते हैं। ये तीनों नगर विकास की दृष्टि से

टिप्पणी

ज्यादा देर तक वंचित नहीं रहेंगे। इसके बाद अगला नागपुर है जिसे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में तबदील करना है। इसके अरिरिक्त, हमारे यहां इस समय छोटे वायुयानों के लिये 85 देशी हवाई अड्डे और 28 विमान चालन के अंतिम अड्डे हैं। लोकप्रिय पर्यटक गंतव्यों के लिये वायुमार्गों का संयोजन इतनी प्रमुख जरूरत बन गई हैं कि यह कई राज्य सरकारों को नये विचारों के साथ आगे आने के लिये लुभा रही है।

राजस्थान सरकार ने पर्यटक आकर्षण रखने वाले नये स्थानो, जो कि अब तक पर्यटन द्वारा अछूते हैं, पर छोटे वायुयानों के लिये हवाई पट्टी का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा है। हिमाचल प्रदेश आने वाले वर्षों में पर्यटक राज्य के रूप में उभरने की उम्मीद करता है। उसने मण्डी जिले के सुन्दरनगर में अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डा बनाने का प्रस्ताव रखा है। कुल्लू, कांगड़ा और शिमला हवाई अड्डों का बड़े वायुयानों के लिये विस्तार और पहले से ही विद्यमान 55 हैलीपेडों के साथ अपने आभ्यांतर क्षेत्र संयुक्त करने के लिये प्राइवेट रूप से संचालित हैलीपेड, टैक्सी सेवाओं का विस्तार उसके अन्य सुझाव है।

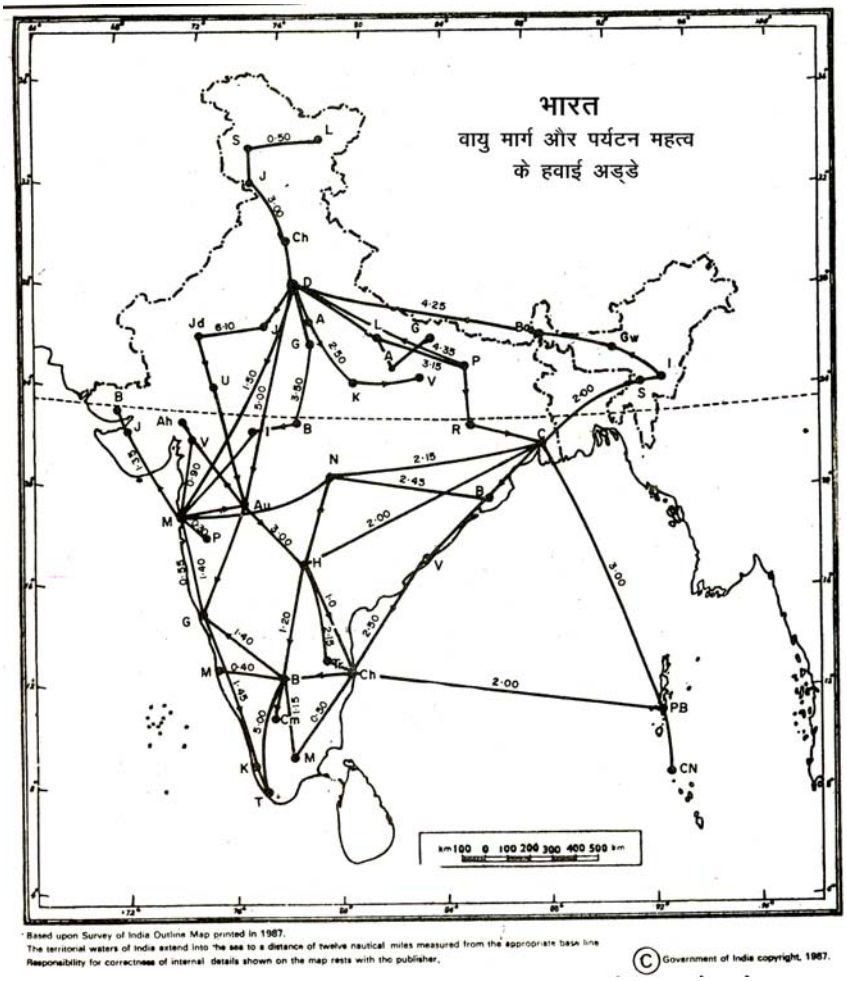


**चित्र 31.1 पर्यटक महत्व के हवाई मार्ग और हवाई अड्डे**

क्योंकि मुम्बई और दिल्ली 70% से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये प्रवेश द्वार हैं। ये दोनों नगर अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये देश के मुख्य निकासी घर का कार्य करते हैं। हवाई सीटों और इन स्थानों में होटलों में लगभग पूर्ण बुकिंग यह संकेत करता है

कि उनकी पूर्व–बुकिंग की जाय। अतः व्यस्त विदेशी पर्यटकों के लिये पूर्व–बुकिंग एवं जगह उपलब्धता की पुष्टि की जा रही है। अतः विश्व पर्यटन मानचित्र पर भारत के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। हमारा देश अब पर्यटकों के लिये पांचवां उच्चतम गंतव्य है। विश्व भ्रमण संगठन ने अनुमान लगाया है कि हवाई परिवहन के उच्च मानकों को कायम रखने को छोड़कर, हवाई टिकटों की लागत में मात्र 10% की कमी पर्यटक यात्रिओं की संख्या में 17 से 22% की वृद्धि कर देती है।

## ख. समुद्री परिवहन

लम्बी दूरी या अधिक समय लगने वाले सफर के लिये यात्री समुद्री मार्ग की जगह हवाई मार्ग पसन्द करते हैं। परन्तु छोटी दूरियों के लिये आनन्द के लिये यात्रा करने, जैसे हमारे समुद्र तटीय जल में मुम्बई से गोआ, चिलका या वेम्बानाद जैसी झीलों में, मुख्य मार्ग से द्वीप या एक से दूसरे द्वीप में जाना पर्यटकों के लिये आकर्षण रखता है। कोची से लक्षद्वीप और चेन्नई या कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर और कार निकोबार बन्दरगाह जाने के लिये देशी और विदेशी पर्यटकों के लिये टुअर पैकेज लोकप्रिय बनते जा रहे हैं। ऐसा टुअर यात्रा, आवास और अन्य सुविधाएं प्रदान करने की कुल लागत को मिलाकर होता है।

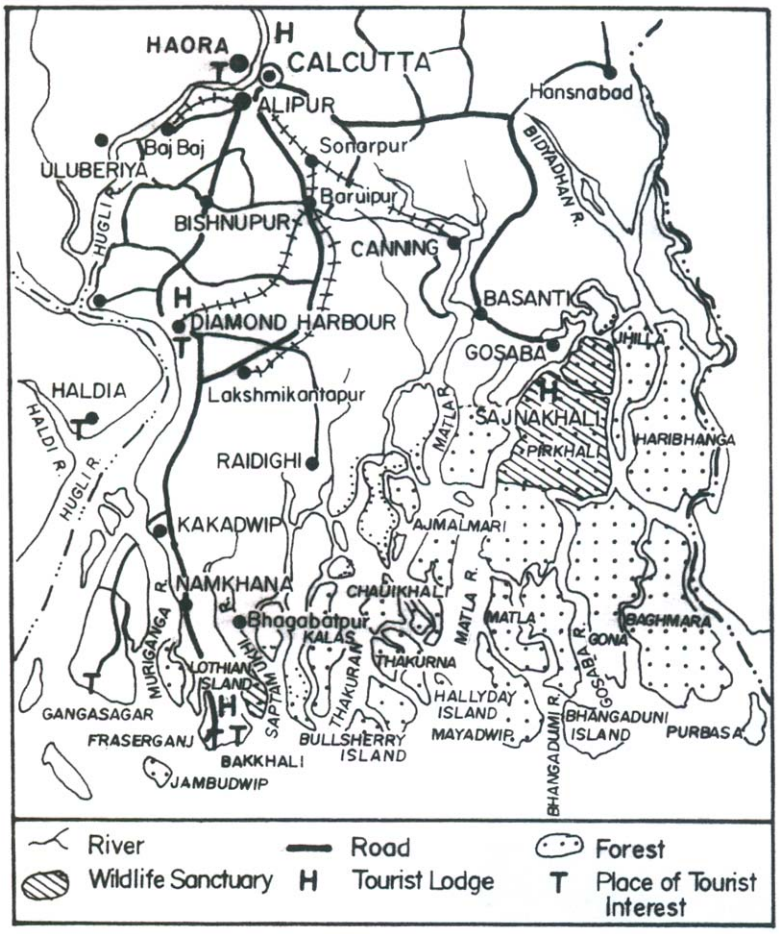


**चित्र 31.2 सुन्दरवन के जल मार्ग**

आगे चलकर, नदी के उपयुक्त भागों में नौपरिवहन के सुधार, जैसे आसाम में ब्रह्मपुत्र

टिप्पणी

पर्यटक यात्रियों के लिये नए मार्ग खोलने की असीम संभावनायें प्रदान कर सकती हैं।

### ग. सड़क या मोटर मार्ग

1970 के दशक से, मात्र धनी व्यक्ति व उसके परिवार के लिये, प्राइवेट कारों, टैक्सी, आरामदेय गाड़ियां तथा 8 से 30 व्यक्तियों के निम्न बजट के समूह के लिये बसें लोकप्रिय बनती जा रही हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग और सुरम्य व व्यस्त सड़कों के किनारों मोटलों ने छुट्टी मनाने वालों द्वारा उनके इस्तेमाल में आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। मोटर मार्ग मुख्य मार्गों के जाल के भीतर ज्यादा और आसान कड़ियां प्रदान करते हैं। मोटर मार्ग के रास्ते महत्वपूर्ण पर्यटक परिपथ आरामदेय सैर–सपाटे के लिये अत्यधिक सुविधाजनक हैं। सामान्यतया ये सभी समेकित टुअर पैकेज के जरिये किया जाता है। दिल्ली–आगरा–जयपुर को जोड़ता हुआ स्वर्णिम त्रिभुज ऐसे परिपथ का एक उदाहरण है। यहां चित्र संख्या 31.3 में आप देख सकते हैं कि कैसे ऐसे अनेकों परिपथ उभर आये हैं या यात्रा करने वाले पर्यटकों के नियमों के रूप में नये सरकिटों का प्रस्ताव किया जा रहा है।

मोटर परिवहन यात्रियों को भीड़–भाड़ वाले शहरी होटलों से दूर राजमार्गों के किनारे–किनारे कम महंगे सराय तक पहुंचाने का काम करता है। यह उपलब्ध सुविधा व्यस्त मौसम के दौरान बड़े शहरों के अन्दर आगन्तुकों की असंचालनीय भीड़ को कम कर देती है। यह निम्न बजट पर्यटकों और छुट्टी बिताने वाले विद्यार्थियों को बड़ी राहत भी प्रदान करती है। इसी कारण से, भारत नई अतिरिक्त सड़कें बनाने की ओर, और विद्यमान सड़कों के सुधार पर अधिक ध्यान दे रहा है। पर्यटक ट्रैफिक की अंतर्निहित मांग के जवाब में, राजमार्ग का निर्माण हमारे चार बड़े मेट्रो शहरों को जोड़ेगा। यह राजमार्ग 5952 कि.मी. से ज्यादा लम्बा होगा। उत्तर से दक्षिण तक श्रीनगर से कन्याकुमारी और पूर्व से पश्चिम तक सिलचर से पोरबंदर तक जोड़ने के लिये दो कोरीडोर की सड़क निर्माण करने का अन्य प्रस्ताव है। ये कोरीडोर क्रमशः 4000 कि.मी. और 3300 कि.मी. तक होंगे।

बस प्रणाली अब तेजी से उभरते बहु–पथ राजमार्गों पर चलने के लिये विस्तृत रूप से विकसित है। मनाली–लेह, दार्जिलिंग–गोंगटक और मदुराई–कोडाइकनाल को पर्यटकों द्वारा रोमांचकारी बस मार्ग के रूप में वर्णन किया जाता है। भारत के हिमालय क्षेत्र में, जहां मोटर मार्ग स्पष्टत्या परिवहन के प्रमुख साधन हैं, सड़क पर्यटन की अच्छी तरह देख–रेख की जा रही हैं।

**चित्र 31.3 मुख्य पर्यटक परिपथ**

## घ. रेल परिवहन

रेलवे से संगठित पर्यटक यात्रा द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति से शुरू हुई। हमारे देश के बड़ा रेल तन्त्र उन दिनों के यात्रियों के लिये सस्ते में और शीघ्र क्रियाशील होता था। रेल परिवहन सिर्फ निम्न बजट आराम प्रदान करता था। रेल मार्ग 200 से 500 कि.मी. की दूरी के अन्दर मुख्य शहरों को जोड़ता था। बहुत लम्बी दूरी के उपमहाद्वीपीय सेवा को कई सौ कि.मी. तक विस्तृत किया। सर्वाधिक उल्लेखनीय मुख्य मार्ग, जो मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और वापस मुम्बई तक जोड़ती है, स्वर्णिम चतुर्भुज बनाते हैं। चतुर्भुज के भीतर त्रिभुज मार्ग एक तरफ मुम्बई और कोलकाता को जोड़ते है और दूसरी ओर दिल्ली और चेन्नई को।

टिप्पणी

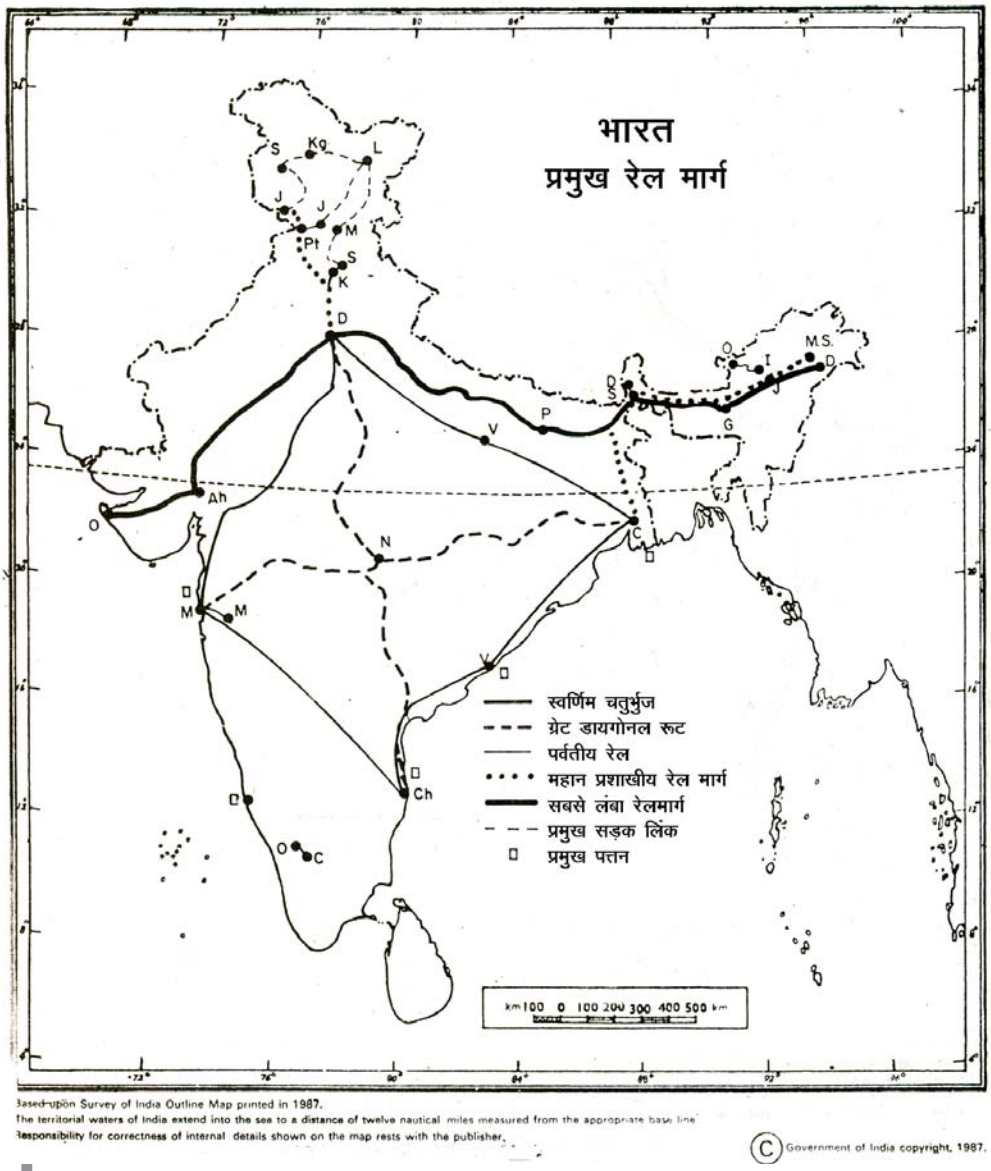


**चित्रः 31.4 भारत के प्रमुख रेलमार्ग**

उत्तर–दक्षिण उपशाखा रेलमार्ग अब जम्मू एवं कश्मीर राज्य में जम्मू–ऊधमपुर तक (अन्ततः श्रीनगर के रास्ते बारामुला तक विस्तारित करना है) और देश की भूमि के दक्षिणतम् छोर तमिलनाडु में कन्याकुमारी तक पहुंच गया है। पूर्व दिशा की ओर यह अरुणांचल प्रदेश में उत्तर–पूर्व फ्रंटियर रेलवे के रास्ते मुरकोंगसेलेक स्टेशन पर समाप्त होता है।

स्वच्छ और शीघ्र यात्रा सुनिश्चित करने के लिये लगभग सभी मुख्य रेलमार्गों का विद्युतीकरण हो गया है। मेट्रो रेल, अन्य पर्यटक आकर्षण के रूप में, भारत के व्यस्त महानगरों में तेजी से शुरू की जा रही है। कितना सही कहा गया है कि ट्रेन द्वारा भारत का भ्रमण स्टेशनों के दृश्य, आवाजें, गंध और साथ ही साथ विविध लोगों को पेश करता है। इसकी कुल लम्बाई 60,000 कि.मी. से ज्यादा है।

टिप्पणी

पांच छोटी पर्वत ट्रेन है जो सर्वाधिक सुरम्य हिल रिज़ोर्टों–शिमला, ऊटी (उदगमंडलम), महाराष्ट्र में माथेरन और कोलकाता के उत्तर में दार्जिलिंग को जोड़ती है। ये पर्यटकों को आनन्द प्रदान करती है। उचित रूप से उन्हें टॉय ट्रेन (खिलौना ट्रेन) कहा गया है। पर्वत में ऊंचाई के बढ़ने के साथ वे बदलते प्राकृतिक दृश्य पेश करती है। रास्ते में पटरियां कई पुलों को आड़े–तिरछे पार करती है, सौ से ज्यादा सुरंगें, और 'यू' मोड़ आते हैं। कुछ भाप इंजन पर्यटकों को उनकी ऐतिहासिक स्मृति को आकर्षित करने के लिये, अभी भी इस्तेमाल किये जा रहे हैं। इस लाइन पर चलने वाली एक महत्वपूर्ण ट्रेन का रोमाचंक नाम ही हिमालयी महारानी है।

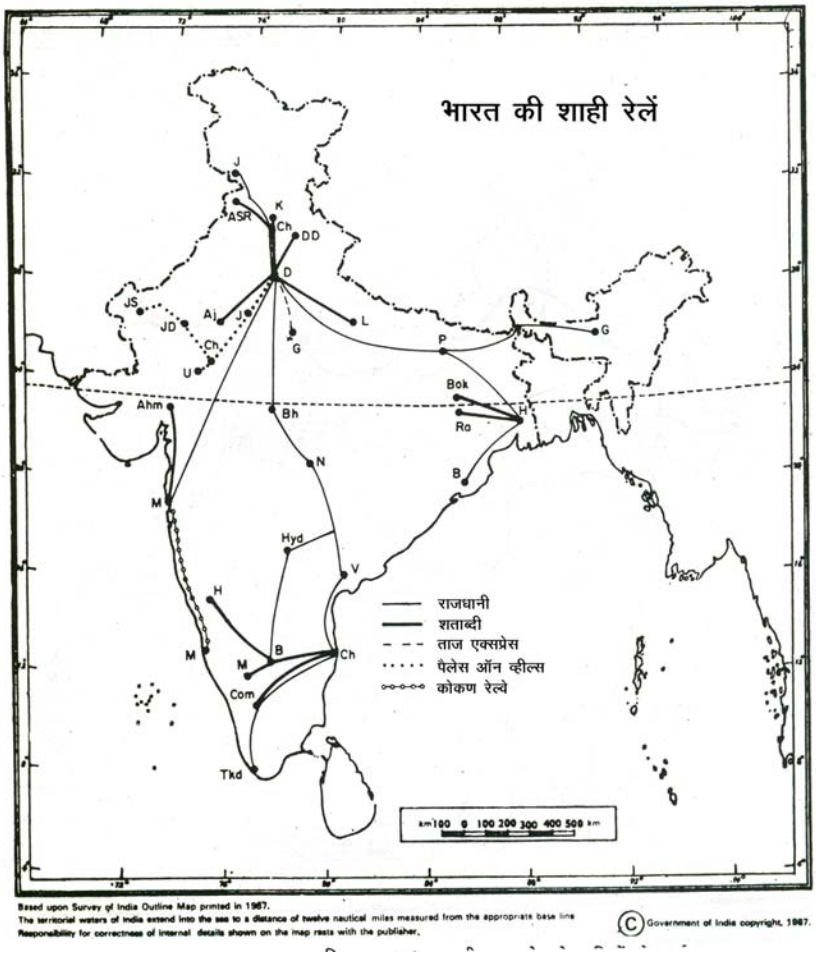


**चित्रः 31.5 भारत की आरामदेय ट्रेनों के रेलमार्ग**

सबसे पुराने भाप रेल इंजन द्वारा खिंचने वाली ट्रेन का दूसरा उदाहरण उस ट्रेन का है जो दिल्ली छावनी से राजस्थान में अलवर तक चलती है। अपनी 138 कि.मी. की यात्रा के दौरान यह ट्रेन फेयरी क्वीन कहलाती है। यह सरिस्का बाघ अभयारण्य के रास्ते गुजरती है। यह अधिकांशतः पर्यटकों की सतत बढ़ती मांगों को पूरा करती है।

छोटी लाइन ट्रेन, यूँ तो पर्वत के ऊपर नहीं चलती है परन्तु पहाड़ियों और विस्तृत घाटियों के रास्ते, पठानकोट से हिमाचल प्रदेश में जोगिन्दनगर तक रसीले हरित चाय

टिप्पणी

बागान और कांगड़ा घाटी के धान के खेतों के रास्ते जाती है।

कोंकण समुद्र तटीय रेलवे अभियान्त्रिकी का कमाल है, जो मुम्बई को गोआ के रास्ते मंगलौर से (कर्नाटक–केरल सीमा के किनारे–किनारे) जोड़ती है। इस 760 कि.मी. लम्बे सुरम्य पथ का 10% हिस्सा पुलों और सुरंगों से बना है।

संतोषप्रद शाही ट्रेन, जिसे 'पैलेस ऑन व्हील' कहते हैं, सात दिनों का सब समाविष्ट पैकेज टुअर प्रदान करती है। यह आगरा और दिल्ली के अलावा राजस्थान के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थानों का दर्शन कराती है। इसके आरामदेय डिब्बों में प्रदेश के मूल राज्यों के महाराजाओं द्वारा अपने महलों में पहले कभी उपयोग की जाने वाली सब सुखकर वस्तुएं और आतिथ्य–सत्कार उपलब्ध होता है। पर्यटक प्रदेश के सैर–सपाटे को इस प्रकार के स्वच्छ और विलासमय महल में खाने–पीने और यात्रा करने से मिलान करना चाहते हैं। इस ट्रेन में उसकी लोकप्रियता के अनुरूप ही श्रेष्ठ ध्यान पाने की उम्मीद कर सकते हैं।

इंड्रेल पास (भारतीय रेल पास) नाम की सुविधा पर्यटकों के लिए विद्यमान है। यह उन्हें 7 दिनों से 90 दिनों की वैध अवधि के अन्दर यात्रा करनी होती है। यह रास्ते की यात्रा सम्बन्धी किसी प्रतिबंधों के बिना, व्यापक प्रकार के आकर्षणों के लिए सरकिट रूट चुनने का विकल्प प्रदान करती है। मार्ग का विकल्प पूर्णतया उपयोगकर्त्ताओं पर छोड़ा हुआ है। स्वदेशी पर्यटकों के लिए, परिभ्रमण रेल टिकट की व्यवस्था उन्हें अपने रास्ते की कठिनाई को कम कर देती है। स्वयं यात्रियों द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार, एक जगह से दूसरे जगह जाने के लिए ट्रेवल कारों की व्यवस्था की जाती है।

यद्यपि 25% शयन सीटें विदेशी यात्रियों के लिए आरक्षित होती है, फिर भी शिकायतें आती है कि आखिरी क्षण तक आरक्षण की पुष्टि नहीं हुई। यह निश्चित रूप से इन पर्यटकों के लिए और पर्यटन के संवर्धन में रुकावट का काम कर सकती है। परन्तु आजकल यदि विश्वस्त टुअर परिचालकों को काम सौंपा जाता है, तो आरक्षण पक्का होता है। निस्संदेह, हमारी रेल खान–पान प्रबन्ध सेवाओं को आगे और सुधारने की जरूरत है ताकि वे अंतर्राष्ट्रीय मानक के स्तर की हो जाएं।

- परिवहन प्रणाली और विभिन्न प्रकार के परिवहन मार्ग पर्यटक गंतव्यों तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं।
- धनी देशों से वायुयानों द्वारा आने वाले, तेज रफ्तार पसन्द व्यस्त पर्यटकों के लए लागत कम महत्व की चीज है।
- निम्न बजट के विदेशी पर्यटकों को दी जाने वाले रियायती हवाई टिकटें प्रोत्साहन का काम करती हैं, ताकि हवाई यात्रा उनकी प्रथम पसन्द बनी रहे।
- समुद्री यात्रा ने अपना महत्व खो दिया है। फिर भी समुद्रतटीय क्षेत्रों में पोत–भ्रमण करने और सैर–सपाटे या पास के द्वीपों को देखने जाने के लिए समुद्री यात्रा की जाती है।

टिप्पणी

- पर्यटकों के लिए बहुत सी सुपर–फास्ट विलासपूर्ण ट्रेनों की व्यवस्था के बावजूद, आजकल के व्यस्त पर्यटकों के लिए, भारत के अन्दर भी पर्यटक स्थलों तक रेल का सफर दूसरी पसन्द है।
- 1970 से, राजमार्गों पर या पर्यटक परिधि सरकिट के भीतर मोटर परिवहन, प्राईवेट कारों और विलासपूर्ण गाड़ियों का उपयोग अपनी लोकप्रियता के कारण बढ़ रहा है।
- विदेशी पर्यटकों के लिए सभी प्रकार की यात्राओं या सफर को ज्यादा आरामदेय बनाने और ट्रैफिक टर्मिनलों पर आथित्य–सत्कार सेवाओं को ज्यादा आकर्षक बनाने के लिए बहुत कुछ करने की जरूरत है।

## 31.2 पर्यटन के आधारिक ढांचे में होटलों का स्थान

पर्यटकों की भिन्न–भिन्न जरूरतों के आधार पर भिन्न वर्गों के होटलों में ठहरने के स्थान की जरूरत पर्यटन आधारिक ढांचे का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मेज़बान देशों में ठहरने के स्थान की सुविधायें पर्यटक उद्योग का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा है कि यह अब अपने आप में होटल उद्योग कहलाता है। सर्वश्रेष्ठ सम्भावित कमरा और रेस्तरां सेवायें पर्यटकों को लुभाने के लिए बड़ी मांग हैं। फास्ट फूड, स्थानीय रूप से मूल्यवान कला या शिल्पी वस्तुओं की आपूर्ति आदि की क्रमबद्ध व्यवस्था पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। ये या तो होटल कॉम्प्लेक्स के अंदर या बाहर आऊटलेट के रूप में हो सकते हैं। ऐसे होटल, भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के ठहरने के दौरान हमें उनसे प्राप्त होने वाले विदेशी विनियम का 50% उपाजित करते हैं।

देशभर में पर्यटक केन्द्रों में ठहरने के स्थान की अत्यधिक कमी अभी भी महसूस की जा रही है क्योंकि सभी वर्गों के पर्यटकों का ट्रैफिक लगातार बढ़ रहा है। हमारे देश में उपलब्ध होटल कमरों की संख्या लगभग 98,000 है। पर्यटन की वृद्धि दर और विद्यमान होटलों के भीतर ही या कुछ नये होटलों के अन्दर निर्माणाधीन कमरों की संख्या को देखते हुए, हमारी जरूरतें अनुमानित उपलब्धता से कहीं अधिक है। ज्यादा होटलों के निर्माण के लिए भूमि उपयोग नियमों में परिवर्तन और मोटलों के निर्माण के लिए भूमि के विशेष आवंटन दो तत्कालिक उपाय प्रस्तावित किये गये हैं। मेट्रो शहरों में भूमि तेजी से ज्यादा महंगी हो रही है और लक्ष्य पूरा करने के लिए आवश्यक वार्षिक विनियोग की दर भी तेज गति से बढ़ रही है। ऐसे शहरों के नजदीक सड़क के किनारे होटलों का निर्माण, और उन शहरों से आसान पहुँच के स्थानों पर होटलों का मिर्नाण पिछले कुछ वर्षों के दौरान हुआ है। भूमि उपयोग नियम और भूमि का विशेष आवंटन ऐसी निर्माण गतिविधि को आगे और प्रोत्साहित करेगा।

तीन से पांच–सितारा होटलों के अतिरिक्त, सुखकर सुविधाएं प्रदान करने के आधार पर होटलों को भिन्न वर्गों में श्रेणीगत किया गया हैं। इन्हें मोटल, टूरिस्ट बंगला, टेन्ट या लॉज कहा जाता है और ये मौसमी, थोड़े दिनों या ज्यादा दिनों के ठहरने के लिए होते

टिप्पणी

हैं। ठहरने के स्थान की व्यवस्था गेस्ट हाऊस या पेइंगगेस्ट के रूप में लोगों के घरों में भी की जाती है। लॉज़ के लिए स्थलों को सावधानी से वनों में चुना जाता है, झरने के पास तम्बू डालने के लिए शिविर लगाए जाते है तथा नावों पर बहते घर के लिए जलाशय का चयन किया जाता है। ये सभी स्थल टूरिस्ट रिज़ोर्ट के रूप में पर्यटकों के लिए मनोहारी होते हैं। पर्यटक रुचि के बहुत से केन्द्रों पर छोटे होटल है जिनमें कम आरामदेय सुविधायें होती हैं परन्तु वे अपने आसपास एंव बाहर अनेकों मनोरंजन और खेल की सुविधायें प्रदान करते हैं। ये सब उपयुक्त आवास स्थान के संगठन और पर्यटक स्थान पर विशेष अवधि के लिये सम्भव विभिन्न पर्यटक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध का उदाहरण है।

उच्च स्तर की सुविधाओं और आराम की सामान्य व्यवस्था के अलावा, बड़े अंतर्राष्ट्रीय होटलों के बड़े कान्फ्रेंस हाल, इंटरनेट सुविधाओं के साथ संचार संबंध खानपान और मनोरंजन के वातावरण और स्वास्थ्य क्लब भी होते हैं। उनमें सामान खरीदने के लिए बाजार और व्यापार केन्द्र होते हैं। होटलों के बड़े कॉम्पलेक्स के अन्दर होटल होते हैं जो अमेरिका या जापान जैसे धनी देशों से उनके व्यापार सहवासियों के उपयोग मात्र के लिए होते हैं। वे ऐसे पर्यटकों के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं क्योंकि, न्यूयार्क, पेरिस, लदंन या टोकियो में उसी स्वरूप के होटलों की तुलना में उनके किराये निम्न होते है। दूसरी ओर, बड़े हवाई अड्डों के समीप कुछ होटल हैं, और ये आने व जाने वाले पर्यटकों को अल्प काल के लिए ठहरने के स्थान प्रदान करते हैं।

मोटल होटल का वह प्रकार है जो विशेष रूप से मोटरकार पर्यटकों की जरूरतें पूरा करने के लिए होते हैं। हम इन मोटलों को शहरों के परिसीमा और व्यस्त राजमार्गों के किनारे–किनारे पाते हैं। हाल के दशक में कार यात्रियों का अत्यधिक उपयोग मोटलों और तैयार फास्ट फूड प्रदान करने वाले किआस्क (छतरीनुमा छोटा विक्रय स्थल) की संख्या में वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। यह अमेरिका में बहुत पाये जाते हैं। आने जाने वाले वाहनों की संख्या और पर्यटक आवागमन की गति को देखते हुए हमारे देश में राजमार्ग के किनारे इन मोटलों आदि को खोलने का विचार तेजी से सुदृढ़ हो रहा है। मोटल, जो सुविधाएं प्रदान करते हैं उसकी तुलना में, कम मंहगे हैं। उदाहरण के लिए, वे स्वयं खाना पकाने के लिए गैस की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। हरियाणा राज्य, ने दिल्ली के आसपास, हिमाचल प्रदेश के साथ अपनी सीमा के समीप तथा उत्तर में पंचकुला तक व्यस्त ग्रैंड ट्रंक राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे, कई मोटलों का निर्माण करके अच्छा उदाहरण दिया है। राज्य मे हिमाचल और जम्मू–कश्मीर के पर्यटक क्षेत्रों को जाने वाले यात्रियों की अत्यधिक संख्या इसी सड़क के रास्ते जाती है। अतः हरियाणा ने इसका पूरा लाभ उठाया है। यद्यपि हरियाणा में पर्यटक आकर्षण कम हैं, तथापि स्थानीय पक्षियों के नाम पर मोटलों का नामकरण किया गया है। होटलों की कतार पर्यटकों को आराम करने के लिए ललचाती है। यात्रा के अगले पड़ाव के लिए रवाना होने से पहले यात्री इन होटलों के बाहर विश्राम करते हैं।

विभिन्न एजेन्सियों द्वारा संचालित विभिन्न स्थलों पर पर्यटक युवा होस्टल, सराय या विश्रामगृह और अवकाश गृह भिन्न बजट के राहगीरों के लिए कामचलाऊ ठहरने का स्थान प्रदान करते हैं।

टिप्पणी

- विभिन्न प्रकार और भिन्न वर्गों के होटलों को यात्रा सुविधाओं से ज्यादा पर्यटक यातायात की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना होता है।
- होटलों की कमी और उनमें कमरों की संख्या की कमी को पूरा करने के लिए पूंजी के भारी विनियोग की जरूरत है।
- यात्रा संचालन के संगठन और होटलों की व्यवस्था को व्यापक रूप से, भिन्न–भिन्न जरूरतों, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और बजट ध्यान में रखना पड़ता है।

## 31.3 टुअर परिचालन और प्रबन्धन

अपने भिन्न पहलुओं की देखभाल तथा पर्यटन के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित सहायक कर्मचारी वर्ग की जरूरत होती है। इसमें प्रशिक्षित टुअर गाइड, ट्रेवल एजेन्ट या टुअर ऑपरेटर, परिचारक, खानसामा और उनके अन्य कई सहायक शामिल है। इनमें से, टुअर गाइड और टुअर ऑपरेटर संचालन कर्मचारी वर्ग के मुख्य कार्मिक होते हैं। पर्यटकों के यात्रा के पूर्व नियोजन से लेकर पर्यटकों के वापस रवाना होने तक टुअर गाईड उनके साथ है। जुड़ जाते हैं। उनकी सतत आपूर्ति पर्यटक उद्योग के विस्तार के साथ साथ बनाए रखनी होती है ताकि पर्यटकों के दीर्घकालिक व आरामदेय वास सुनिश्चित कर सकें। पर्यटन जैसे संवेदनशील सेवा उद्योग का चलना मुख्य रूप से उनके कौशल पर निर्भर करता है। पर्यटकों के साथ फलदायक अंतक्रिया उनके कौशल पर निर्भर करती है। यदि वे अनुपस्थित रहते हैं या सही–सही भूमिका अदा करने में असफल रहते हैं तो पर्यटकों का आना कम हो जाता है। उसे लोकप्रिय बनाने के बड़े विज्ञापन अभियान के बावजूद यह उद्योग नष्ट होने के कगार पर पहुँच सकता है। पर्यटक गंतव्यों पर उनका कार्य होटल के मालिकों और पेशेवर होटल प्रबन्धक के कार्य के समान होता है।

### (क) टुअर गाइड

समयोपरि, टुअर गाइड आगन्तुकों को पर्यटक स्थान या क्षेत्र के आकर्षणों के प्रति प्रवृत करता है और उन्हें वास्तविक पर्यटक स्थलों के चारों ओर घुमाता है। निम्नतम स्थानीय स्तर पर, भ्रमण मार्गदर्शन पर्यटन के समस्त कार्यक्रम के उन्नयन के लिए मौलिक इकाई है।

एक प्रभावशील टुअर गाइड को क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, पर्यटक रूचि के ठिकानों की पृष्ठभूमि, पूर्व इतिहास जैसे मंदिरों, पूजास्थलों, स्मारकों, पुराने स्थलों के खंडहरों और किलों के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। एक अच्छे टुअर गाईड से, प्रासंगिक स्थानीय परम्पराओं, संस्कृति, लोक–कथाओं, निष्पादन कलाओं, उत्सवों और मेलों के बारे में बात करना अपेक्षित रहता है। इस तरह के वर्णन से पर्यटक ज़्यादा आकर्षित होते हैं और उनमें और ज्यादा जानने की उत्सुकता जागृत होती है। जो भाषा पर्यटक समझता है उसी भाषा में बताना बेहतर होता है। पर्यटकों के मूल देश की जानकारी के

टिप्पणी

साथ ही एक अनुभवी टुअर गाइड उनके रूझान जान जाता है। यह ज्ञान होने से उनकी प्रतिक्रियाओं को पर्यटक अच्छे से ग्रहण करते हैं और उनके सवाल से सन्तुष्ट होते हैं। टुअर गाईड का कौशल, स्थानीय घटनाओं के बारे में रोचक घटना वृत गढ़ने में और पर्यटक दृश्य स्थलों से सम्बधित व्यक्तियों द्वारा अदा की गई विख्यात भूमिकाओं की मुख्य–मुख्य बातें बताने में निहित है। पहला भ्रमण अगले भ्रमण की शुरूआत बन सकती है यदि टुअर गाईड अपने निष्पादन द्वारा पर्यटकों के बीच स्थायी रूचि उत्पन्न करने में सफल होता है। एक टुअर गाईड द्वारा किसी प्रकार की गलती न केवल सिर्फ अपने लिए परन्तु ऐसे कार्यकर्त्ताओं के पूरे समूह के लिए बदनामी लाता है।

यहां स्थानीय जनजाति के सदस्यों का जिक्र करना उचित होगा जो आंध्र प्रदेश के विशाखापतनम जिले में, चूने की बहुत गहरी सुन्दर गुफाओं और उनके सोपानी जलप्रपात को दिखाने के लिए गाइड का कार्य करते हैं। वर्ष 2001 तक, वे प्रतिमाह 7000/- रुपये कमा लेते थे। लोग रास्ते में मिट्टी के तेल का लोम्ब या टार्च का उपयोग करते हुए, पर्यटकों को गुफाओं में ले जाते थे। वर्ष 2002 में, सरकार ने गुफाओं के फर्श सीमेंट के बनवा दिये। अन्दर के हिस्से में बिजली लगवा दी और जनजातीय गाइडों को 3000/- रुपये की एक मुश्त मासिक आय निर्धारित कर दी। वे लोग पहले बहुत सी सेवायें प्रदान करते थे, सब खत्म करा दी गई। सरकार, स्थानीय लोगों की आय में कमी की लागत पर मुद्रा की बड़ी मात्रा उपार्जित करने लगी। गाइड की सेवाओं पर निर्भर स्थानीय लोगों का इस तरह का अलगाव इस काम के लिए निराशा प्रदर्शित करता है।

## (ख) टुअर ऑपरेटर

पर्यटन का परिचालन अब विशिष्ट प्रकृति का काम बन गया है। दिन प्रति दिन, किसी भी एक कार्यकर्ता के लिए, पर्यटन के संचालन के सभी भागों की देखभाल करना कठिन बनता जा रहा है। इस कारण टुअर ऑपरेटर का कार्य टुअर गाइड के कार्य से बिल्कुल भिन्न होता है।

टुअर ऑपरेटर को परिवहन जरूरतों के संचालन, वीसा और परमिट की निकासी की औपचारिकताएं और पर्यटकों के लिए होटलों में ठहरने के स्थान की बुकिंग करने का कार्य करना हाता है। ऐसे व्यक्ति को सम्बधित नियमों और अधिनियमों में अक्सर किये जाने वाले नवीनतम परिवर्तनों के बारे में अपनी जानकारी बनाये रखनी होती है। टुअर ऑपरेटर को, उन अधिकारियों के साथ, जो यातायात बुकिंग और पर्यटक स्थलों पर या उनके समीप होटलों में आरक्षण की व्यवस्था करते हैं, सम्बन्ध बनाये रखने पड़ते हैं। उसे यह जानकारी भी होनी चाहिए कि शामियाने व जोखिमपूर्ण पर्यटन के लिए अन्य उपकरण कहां से किराये पर मिलते हैं।

आजकल, भ्रमण का कार्यक्रम जाने से बहुत पहले निश्चित करना पड़ता है। वे दिन चले गये जब व्यक्ति, जब चाहे व्यापार या आनन्द के लिए, यात्रा शुरू कर सकता था। पर्यटकों के एक समूह या एक अकेले पर्यटक के पास भ्रमण के लिए पूर्व–निर्धारित अनुसूची होती है। किसी माह विशेष में, उनके पास कुछ ही दिन खाली होते हैं जिसमें

टिप्पणी

वे इच्छित संख्या के पर्यटक स्थलों को देख लेना चाहते हैं। आधुनिक पर्यटन की तीव्र वृद्धि के कारण शिखर मौसम में गंतव्य पर्यटकों की बढ़ती मांग पूरा करने में असफल रहते हैं। टुअर ऑपरेटरों को समय से पहले ही कई औपचारिकताओं को पूरा कर लेना होता है। इनमें वायु मार्ग, रेलवे या सड़क मार्ग से जाने वालों के लिए सीटें या शायिका की पूर्व बुकिंग और होटलों में उपयुक्त आवास के लिए पूर्व बुकिंग शामिल हैं। यदि पर्यटक पर्यटन क्षेत्र में ही रहना चाहे तो भी उसके रहने की वैकल्पिक व्यवस्था करना टुअर ऑपरेटर का कार्य होता है।

टुअर ऑपरेटर पर्यटन का उचित मार्ग, भाड़े में कटौती, टिकट पर प्रतिबन्ध, (यदि कोई है) और यात्रा का प्रबन्ध करने योग्य अवधि के मामले में भी मार्गदर्शन कर सकता है। सस्ती उड़ानों के अलावा, विश्वसनीय भ्रमण एजेन्ट अपने ग्राहकों के उनके पसंद के हवाई अड्डों पर सुरक्षित उतराई का भी ध्यान रखता है। यदि पर्यटक की किसी प्रकार की कोई विशेष आवश्यकतायें हैं, जैसे खाने, भ्रमण बीमा, अपनी रूचि की फोटो खींचना और अपनी पसन्द की उड़ान से टिकटों का पुष्टिकरण, तो उन्हें समय से उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

## (ग) टुअर गाइडों एवं टुअर ऑपरेटरों का प्रशिक्षण

टुअर गाइडों एवं टुअर ऑपरेटरों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा आवश्यक कौशल सीखना पहला महत्वपूर्ण कदम है। ये दोनों कार्यकर्ता फिर पहले से ही प्रशिक्षित कर्मियों की संगत में इस गतिविधि में सहभागिता द्वारा कौशलों को और ज्यादा विकसित करते हैं।

प्रशिक्षार्थी तब स्वतंत्र रूपसे कार्य करने के लिए अपने को सुसज्जित कर ट्रेवल एजेन्सी से जुड़ जाते हैं। इस दिशा में यह दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कदम है। अन्त में, उनमें से प्रत्येक को किसी क्षेत्र विशेष के लिए पर्यटन गतिविधि हेतु पर्यटन के परिचालन या मार्गदर्शन पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा जाता है। इस तीसरे कदम में, योग्य पेशेवर टुअर गाइड या टुअर ऑपरेटर बनने के लिए उनका परीक्षण किया जाता है। राजस्थान, हिमालयी क्षेत्र से उतना ही भिन्न है जितना समुद्र तटीय पुलिनों से मन्दिर और सांस्कृतिक स्थल। अतः ये कार्यकर्त्ता विशिष्ट आवश्यकता हेतु प्रशिक्षित किये जाते हैं।

## (घ) ट्रेवल एजेन्सी

निम्न स्तर पर टुअर गाइड और टुअर ऑपरेटर या ट्रेवल एजेन्ट और ऊँचे स्तर पर टुअर प्रबन्धक ट्रेवल एजेन्सी के सदस्यों की टीम के रूप में कार्य करते हैं। दूसरे शब्दों में, कार्यकर्ताओं का पूरा समूह ट्रेवल एजेन्सी बनाता है। इनमें से प्रत्येक, पर्यटक को प्रारम्भिक अवस्था से ही प्रेरित करने से लेकर, ठहरने की अवधि और उसके अपने घर वापस जाने तक, अपनी–अपनी भूमिकायें अदा करता है।

एजेन्सी पर्यटकों की यात्रा और आवास को आरामदेय और सन्तोषप्रद बनाने के लिए,

टिप्पणी

यात्रा प्रारम्भ करने से पहले अपने कार्यकर्ताओं को पर्यटकों से पूछताछ करने का निर्देश देती है। यह एजेन्सी, पर्यटक गंतव्य के दूसरे क्षेत्र में कार्य कर रही दूसरी समान एजेन्सी के साथ समन्वय करने के लिए एक मंच भी बन जाती है। ट्रेवल एजेन्सी की यह भूमिका दर्शकों को मदद करती है। ऐसे में पर्याप्त जानकारी एवं दर्शकों की रूचि के अनुसार देश में ठहराव में भी वृद्धि होती है तथा लोग एक तरह के दर्शनीय स्थलों से दूसरे प्रकार के दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए चले जाते हैं। इस तरह दर्शकों की जानकारी बढ़ती है और बाद में वे अन्य समय ज्यादा दर्शन के लिए भारत के अन्य भागों में पहुँच जाते हैं।

ट्रेवल एजेन्सियों का, समस्त पर्यटक क्षेत्रों में, अपना तंत्र होता है और उनके पास प्रत्येक जानकारी को शीघ्रतम संचार माध्यम द्वारा भेजने के साधन होते हैं। वे पर्यटकों के समूह के लिए सर्किट मार्ग के रास्ते पैकेज टुअर की व्यवस्था करते हैं और रियायती दाम पर यातायात, आवास एवं भोजन की व्यवस्था करते हैं। यह व्यवस्था कठिन क्षेत्रों जैसे हिमालय में विशेष रूप से सहायक होती है, क्योंकि उन क्षेत्रों में ऐसी सुविधायें कम उपलब्ध होती हैं। एजेन्सियां, पर्यटकों की तरफ से, सम्बधित अधिकारियों से परमिट, वीसा प्राप्ति प्रमाणपत्र, और मुद्रा लेनदेन के लिए सम्पर्क करती हैं। वे लम्बी दूरी के यातायात के पुष्टीकरण का बोझिल कार्य भी करती है। वे पर्यटन के विभिन्न भागों के बीच कड़ी का कार्य करते है, तथा हवाई अड्डे या रेलवे स्टेशनों से होटलों तक स्थानीय यातायात का भी प्रबन्ध करते हैं। ट्रेवल एजेन्सियां बहुधा संबद्ध पर्यटक समूह और पर्वतारोहण, स्कीइंग, हेली स्कीइंग, और स्नोर्टिंग में प्रशिक्षण आयोजित करने वाली संस्थाओं के बीच पुल के रूप में कार्य करती है। वे पर्यटकों को, स्थानीय कपड़ा, शिल्प और शिल्प जैसी बनावटी चीजें, पर्यटकों को उचित दुकानों या राज्य इम्पोरियम से खरीदने की सलाह भी देते हैं। ट्रेवल एजेन्सियों का कार्य विस्तृत हो रहा है क्योंकि पर्यटन स्वयं कई उप–शाखाओं में बट रहा है। पर्यटकों की विविध अभिरुचियां इसका वास्तविक कारण है। ट्रेवल एजेन्सियां, मुख्य मध्यस्थ के रूप में, दंत चिकित्सक और आयुर्वेदिक मालिश की सेवा और योग प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं से सम्पर्क करती हैं। ये पर्यटकों में नव विकसित रुचिओं को बढ़ाने का प्रयत्न करती है।।

टुअर मैनेजर, निरीक्षणात्मक स्तर पर ट्रेवल एजेन्सी के परिचालन सम्बन्धी कार्य की देखभाल करता है। यह उनके उत्तरदायित्व का ही भाग है कि वे न केवल दैनिक प्रबन्ध के प्रति चिन्तित रहे अपितु विविध प्रकार की विशिष्ठ संस्थाओं के साथ बढ़ते हुए सम्बन्ध को सुदृढ़ करना भी उनका मकसद होता है। वे एजेन्सी को प्राप्त आवश्यक सूचना देने के लिए समस्त कार्यों की निगरानी करते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसी प्राप्त सूचना, या जानकारी आंकड़े का आधार होती है। यह पर्यटन के प्रबन्ध को सुधारने में मदद करती है, लुप्तांशों की भराई करती है। समय–समय पर पर्यटन नीति में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए सरकारी एजेन्सियों या विभागों को जानकारी भिजवाता है।

टिप्पणी

## 31.4 ऋतु विशेष और गन्तव्य विशेष भ्रमण परिचालन

आम गंतव्य विशेष भ्रमण परिचालन के विपरीत, कुछ क्षेत्र, विशिष्ट मौसमों में भ्रमण करने के लिए उपयुक्त होते हैं। हिमाचल प्रदेश के उत्तरी भाग में लाहौल–स्पीति जो हिमालय और कश्मीर के लद्दाख–जास्कर प्रदेश का ऊँचा और अत्यधिक दूरस्थ प्रदेश है, इसका उदाहरण है। यह क्षेत्र, अपनी लम्बी एवं कठोर सर्दियों के दौरान बर्फ द्वारा मार्ग अवरूद्ध हो जाने के कारण राज्यों के मुख्य क्षेत्रों से एकदम अलग पड़ जाता है। वास्तव में गम्भीर रूप से जोखिम प्रिय पर्यटक यहां केवल गर्मी के छोटे मौसम में आते हैं। यद्यपि यहां का वातावरण नीरस होता है, तथा अनावृत परन्तु बहुरंगी चट्टाने और बर्फीली हवायें असत्कारशील होती है। इसी कारण गर्मियों के बरसाती महीने भ्रमण करने के लिए उपयुक्त हैं।

चूँकि वे मानसून के वृष्टि–छाया क्षेत्र में स्थित है, वे उस समय भ्रमण के लिए अनुकूल होते है। इन राज्यों के दक्षिणी भागों में भारी वर्षा होती हैं। कोई भी टुअर ऑपरेटर वर्ष के इन दिनों में गम्भीर पर्यटक को भूबद्ध क्षेत्र में ले जाने से फायदे में रहता है। अद्भुत सांस्कृतिक आकर्षण के कारण वह पर्यटकों के दिल में एक विशेष स्थान बनाने में कामयाब होता है। पर्वत के शिखर पर बौद्ध मठ पाये जाते हैं जो बर्फ से ढकी पर्वतमालाओं द्वारा छाया में पड़ जाते हैं। परन्तु उनकी आदिकालीन वास्तुकला, भित्ति चित्र और मठवासीय जीवन की कथायें बरकरार हैं। ये आकर्षण, यात्रा की कठिनाइयों और अच्छी पर्यटक सुविधाओं के अभाव की कुछ हद तक क्षतिपूर्ति कर लेते हैं। सिर्फ, पर्यटकों को जनजातीय परिवारों के साथ के लिए तैयार होना चाहिए।

भक्तजनों की, कश्मीर में अमरनाथ, ऊँचे हिमालय में उत्तराखण्ड में ब्रदीनाथ, केदारनाथ व हेमकुण्ड के चुनिंदा गंतव्यों की, वार्षिक यात्रा भी सिर्फ गर्मी के विशेष मौसम में भ्रमण परिचालन के लिए सम्भव होता है।

दूसरी ओर, अण्डमान व निकोबार द्वीपों में, वर्षाकाल में नहीं जाना चाहिए। इस कारण दक्षिणी भारत का बड़ा भाग बेहतर विकल्प है। यह शीतकालीन पर्यटकों को, भारत के उत्तरी मैदानों की कठोर सर्दी से बचने और दक्षिणी क्षेत्र की हल्की सर्दी का आनंद प्रदान करता है। ऐसी स्थिति में, पर्यटक की पसन्द ऋतु–विशिष्ट होती है यद्यपि कोई एक या एक से ज्यादा गंतव्यों के लिए आ सकता है। राजस्थान में, जैसलमेर के बालू के टीले, उसके रेगिस्तान और ऊँट उत्सव शीतकालीन भ्रमण के लिये प्रसिद्ध हैं। गंतव्य–बद्ध भ्रमण परिचालन, स्थान विशेष या उनके पर्यटक आकर्षण के लिए स्थानीय क्षेत्र मुख्यतः घूमने की इच्छा पर निर्भर होते हैं। भारत के तटों पर गोआ, केरल और पुरी की पुलिनें सर्वोत्तम पर्यटक गंतव्य हैं क्योंकि वहां शान्त समुद्र के किनारे बालू, जलमार्ग, बेकवाटर और जलक्रीड़ाओं की सुविधायें उपलब्ध है। इसी तरह से, भ्रमण परिचालन, जब हिमालय में पहाड़ी स्टेशनों, मध्य पहाड़ी श्रेणियों, पश्चिमी घाटों और नीलगिरि के लिये संचालित किया जाता है, तो गंतव्य विशिष्ट होता है। यात्रा और ठहरने की अवधि का निर्णय पहाड़ी गंतव्यों द्वारा प्रस्तुत आकर्षण के अनुसार होता है।

टिप्पणी

- पूर्णतया प्रशिक्षित टुअर गाइड और टुअर मैनेजर, व्यक्ति और टीम के रूप में, ट्रेवल एजेन्सी चलाने वाले संचालक स्टाफ की श्रृंखला में अत्यावश्यक कड़ियां बन गये हैं।
- भ्रमण प्रचालन, विदेशी पर्यटकों की स्थिति में प्रतिबंधित क्षेत्रों में घूमने जाने के वीसा प्रमाण पत्रों, बीमा और अनुमति पत्र लाना होता है।
- ट्रेवल टुअर प्रचालकों की सेवाओं की आवश्यकता ठहरने के स्थान की बुकिंग, आरक्षित शायिकाओं या सीटों के लिए टिकट लाने और पर्यटकों को किसी प्रकार की जानकारी देने के लिए होती है। आज के व्यस्त पर्यटन के समय में, महीनों पहले आरक्षण सम्बन्धी औपचारिकताओं को पूरा करना होता है अतः टुअर प्रचालकों की सेवायें बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।
- कुछ टुअर प्रचालन, वर्ष के कुछ समय के दौरान प्रतिकूल मौसम की स्थिति मे ऋतु–विशेष होता है, जबकि दूसरे प्रकार के टुअर प्रचालन गन्तव्य–विशेष होते हैं। इनमें टुअर प्रचालन आकर्षणों के लिए पर्यटकों की रूचि के अनुसार होते हैं।
- पर्यटन के विकास के दौरान, पर्यटन का प्रबन्ध एक व्यवसाय बन गया है और प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं का काम अब विशिष्ट प्रकृति का बन गया है।

## पाठगत प्रश्न 31.1

1. निम्नलिखित के लिए एक उपयुक्त शब्द बताएं :

   (क) झील में बहता होटल

   (ख) रास्ते के किनारे छोटा होटल जो कमरों के समीप कारों की पार्किंग की जगह प्रदान करता है और भविष्य में जगह को विस्तारित किया जा सकता है।

   (ग) सड़क किनारे स्टॉल जो यात्रियों को शीघ्र पकने वाला आहार बेचते हैं।

   (घ) क्षेत्र में पर्यटक स्थानों पर ले जाने के लिए तैयार यात्रा अनुसूची।

   (ड़) भारत में सबसे बड़ा जल वन्य क्षेत्र जो अधिकांश रूप से जलमार्गों द्वारा पहुँचने योग्य है।

2. (क) तीन बस मार्गों की सूची तैयार करें जो पर्यटकों द्वारा रोमांचकारी बताये गये हैं।

   (ख) अंतर्राष्ट्रीय होटल प्रांगण के चार विशेष लक्षण बताएं।

टिप्पणी

3. पर्यटक आवागमन बढ़ने के लिए चार बड़े प्रोत्साहन क्या है?

4. उच्च वर्ग के यात्री हवाई यात्रा कम्पनियों द्वारा दी जा रही कटौतियों की रियायतों को पाने की फिक्र क्यों नहीं करते हैं?

## आपने क्या सीखा

बुनियादी संसाधनों, जैसे कुशल परिवहन तन्त्र, होटल, सत्कारशील सेवायें और अन्य विभिन्न सुख साधनों का विकास आधुनिक पर्यटन के संचालन के लिए आधार है। पर्यटन, चाहे घरेलू हो या अंतर्राष्ट्रीय, का अस्तित्व और संवृद्धि सब श्रेणियों के ठहरने के स्थान में वृद्धि पर मुख्य रूप से निर्भर करती है। इससे विशेष रूप से व्यस्त शिखर समय में भी पर्यटक स्थानों पर पर्यटकों की भीड़ से निबटा जा सकता है। अल्प दूरी एवं लंबी दूरी के भ्रमण के लिए, हवाई, जल और स्थल परिवहन को विकसित करने की आवश्यकता है। परिवहन के विभिन्न वैकल्पिक साधन, समेकित ढंग से उपयोग के लिए प्रदान किये जाने चाहिए ताकि एक दूसरे के पूरक बन सके।

पर्यटन जैसा संवेदनशील सेवा उद्योग, विभिन्न टुअर कार्यकर्ताओं जैसे टुअर गाइड और टुअर प्रचालकों के कुशल कार्य पर समान रूप से निर्भर करता है। उन्हें अपने कार्य को प्रशिक्षित पेशेवरों के रूप में अपनाना चाहिये। ये दोनों कार्य अब सुव्यक्त रूप से सुस्पष्ट होते जा रहे हैं और वे विशिष्ट प्रकृति के हैं। इन कार्यकर्ताओं को ध्यानपूर्वक कार्यक्रम के साथ प्रशिक्षण लेना चाहिए। इससे पहले कि उन्हें भिन्न प्रकार के पर्यटकों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से अंतःक्रिया करें उन्हें कदम दर कदम श्रृंखलाबद्ध प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

विदेशी पर्यटक अपने गन्तव्य देश में, पूर्व नियोजन अवस्था से लेकर वापस घर जाने की अवस्था तक टुअर प्रचालक पर निर्भर होता है। उन्हें उनके वीसा, आवश्यक परमिटों की बीमा, और उनके भ्रमण व होटलों में ठहरने के दौरान टिकट लेने या आरक्षण के बारे में पूर्व जानकारी दी जानी चाहिए।

टुअर आपरेटर सब प्रकार के पर्यटकों को, विशेषरूप से शिखर मौसम के दौरान पर्यटकों के तीव्र प्रवाह की दृष्टि से, उनके पूर्व निश्चित टुअर अनुसूची को नियोजित करने में मदद करता है। वह हवाई अड्डे पर कानूनी औपचारिकताओं और पर्यटकों के सामान की देखभाल करता है। टुअर आपरेटर मौसम–विशेष या गंतव्य–विशेष हो सकता है, पर वो विशेष या विभिन्न प्रकार के आकर्षणों के लिए यात्रियों के हित की देखभाल करते हैं। जबकि टुअर आपरेटर की जिम्मेदारी पर्यटक या पर्यटकों के समूह

टिप्पणी

के अपने देश या घर के स्थान से शुरू हो जाती है। टुअर गाइड पर्यटक स्थल पर काम करता है। दोनों टुअर मैनेजर के समग्र संचालन एवं निगरानी के अंदर कार्य करते हैं। ये सभी लोग, कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न उद्देश्यों के लिए उनकी सहायता करते है, सभी सुस्थापित ट्रेवल एजेन्सी के आवश्यक अंग है।

## पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दें :

   (क) पर्यटन के लिए कोंकण रेलवे की क्या संभाव्यता है?

   (ख) भारत में मेट्रो–रेल कहां पर शुरू की जा रही हैं

2. टुअर गाइडों और ट्रेवल एजेन्टों के प्रशिक्षण में किन चार बातों का अनुपालन किया जाता है?

3. निम्नलिखित के संदर्भ में, बढ़ते हुए पर्यटक आवागमन से निबटने के लिए एक–एक प्रमुख कदम बताइए

   (क) सड़कें, (ख) रेलवे, (ग) हवाई मार्ग, (घ) होटल

4. कौन से चार राज्य अभी तक छोटी लाइन की पर्वती ट्रेनें चला रहे हैं? उनके द्वारा पहुँचने वाले अंतिम हिल स्टेशन का नाम बताएं।

5. निम्नलिखित के बीच संक्षेप में अन्तर बताइए:

   (क) परिवहन के ढंग और साधन

   (ख) स्वर्णिम त्रिभुज और स्वर्णिम चतुर्भुज

   (ग) पर्यटक सर्किट एवं चक्रीय रेलवे टिकट

   (घ) खिलौना ट्रेन एवं हेलीपैड टेक्सी

   (ड़) फेयरी क्वीन और हिमालयन क्वीन

6. उपलब्ध स्थानीय टुअर गाइडों को अलग कर देने का क्या परिणाम होता है? सोदाहरण बतायें।

टिप्पणी

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**31.1**

1. (क) शिकारा (ख) मोटल, (ग) किऑस्क, (घ) परिधि भ्रमण, (ड़) सुन्दरवन

2. (क) मनाली–लेह, दार्जिलिंग–गंगटोक, मदुराई–कोडईकनाल मार्ग।

   (ख) सम्मेलन हॉल, इंटरनेट सुविधाओं के साथ संचार सम्बन्ध, स्वास्थ्य क्लब, शापिंग मार्ट/ट्रेडिंग आउटलेट

3. (क) परिवहन प्रणाली की क्षमता में वृद्धि, (ख) आरामदेय सीटों में उचित वृद्धि, (ग) उच्च गतियां, (घ) किराये में कटौती।

4. अनुच्छेद 31. 1 (क) देखें।

## पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. (क) 31.1 के अंतर्गत पैरा 1 देखें।

   (ख) अनुच्छेद 31.1 घ देखें।

2. दिल्ली–कोलकाता, दिल्ली–मुम्बई, मुम्बई–चेन्नई और कोलकाता–चेन्नई को जोड़ने वाले रेल मार्ग स्वर्णिम चतुर्भुज बनाते हैं, जबकि दिल्ली–आगरा–जयपुर और वापस दिल्ली पर्यटक परिधि सड़क मार्ग स्वर्णिम त्रिभुज कहलाता है।

3. (क) बहु–पथ/सीमा चौकी की औपचारिकताओं और यातायात जमाव की निकासी की क्षमता प्रदान करने के लिए विद्यमान सड़को का सुधार।

   (ख) रेलवे आरक्षण और आहार व्यवस्था की सुविधाओं में सुधार।

   (ग) हवाई उड़ान की सुरक्षा, आराम और नियमितता सुनिश्चित करने की बेहतर सुविधाएं।

   (घ) अच्छी आहार व्यवस्था और सत्कारशील सेवाएं प्रदान करने हेतु कुशल व प्रशिक्षित संचालन स्टाफ।

4.

| राज्य | हिल स्टेशन |
|---|---|
| (क) हिमाचल प्रदेश | शिमला |

टिप्पणी

(ख) पश्चिम बंगाल दार्जिलिंग

(ग) महाराष्ट्र माथेरान

(घ) तमिलनाडु उदगमंडलम (ऊटी)

5. (क) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ख) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ग) अनुच्छेद 31.1 (ग) व (घ) देखिए।

(घ) अनुच्छेद 31.1 देखिए।

(ड़) अनुच्छेद 31.1 (घ) देखिए।

6. अनुच्छेद 31.1 (क) देखिए।